ISSN: 2277-3665 Impact Factor : 2.9052(UIF) Volume - 5 | Issue - 5 | May - 2016

Academic Sports Scholars

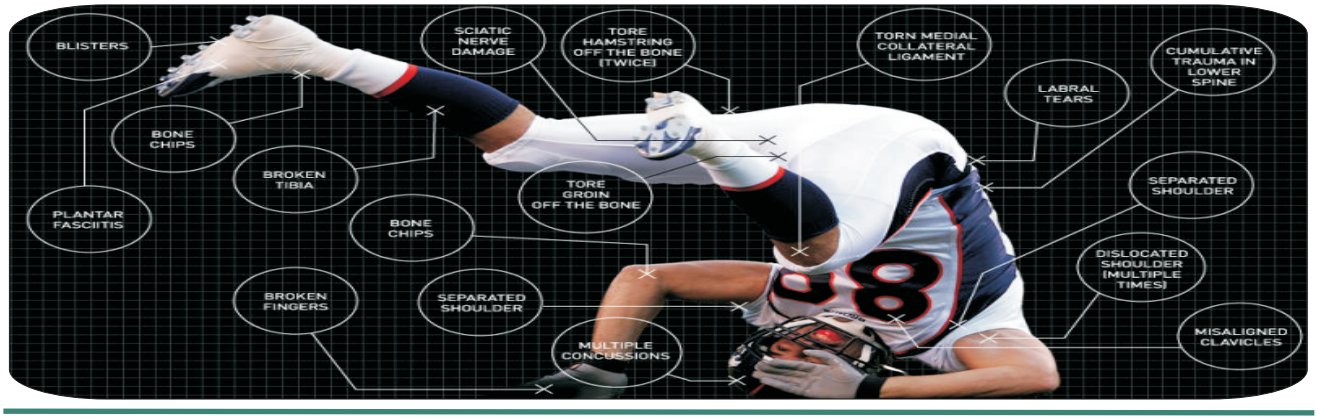


# खिलाडियों के व्यक्तित्व आयाम बर्हिमुखी– अतंमुर्खी का खेल संवेगात्मक बुध्दि पर पडनेवाला प्रभाव का अध्ययन

हरेश कुमार पटेल[1] , यशवंत व्ही. पाटील[2]
[1]पदव्युत्तर शारीरीक शिक्षण विभाग , आर.टि.एम. नागपूर विद्यापीठ , नागपूर.
[2]पी. डब्ल्यू. एस. महाविद्यालय , कामठी रोड , नागपूर.

**सारांश :–**

आज परिवर्तनशील समाज मे अनुसंधान कार्य (Reserarch work) का अपना अलग महत्व है। वास्तव मे शोध यह ज्ञान विकास का माध्यम है। इसी आधार अनुसंधानकर्ता ने अपने अनुसंधान हे लिए 'खिलाडियों के व्यक्तित्व आयाम बर्हिमुखी–अंतमुर्खी का खेल संवेगात्मक बुध्दीपर पडनेवाला प्रभाव का अध्ययन' यह विषय लिखा था। जिसमे 200 पुरूष और 200 महिला खिलाडिंयो को विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं मे प्रतिनिधीत्व करनेवाले खिलाडी का चयन यादृच्छिक विधी व्दारा जिनकी आयुसिमा 18 से 25 वर्ष थी। इन न्यादर्शो से MGTG की प्रश्नावली भरकर लिया प्राप्त आकडो के आधारपर सांखिकीय विश्लेषण करके निष्कर्ष और सुचना निकाली गई।

**खोजशब्द :** अधिगमीत व्यवहार, टुर्नामेंट, प्रत्याक्षिकरण स्मृती।

**प्रस्तावना :–**

शिक्षा का मुख्य उददेश विद्यार्थीयो मे व्यवहारागत परिवर्तन लाना है। सिखना सार्वभौमिक है और अनवरत चलता रहता है और अधिगमित व्यवहार को शिक्षा दिशा प्रदान करता है। शिक्षा मनुष्य को पूर्ण करने मे महत्वपूर्ण मानी जाती है। मनुष्य एक सामाजीक प्राणी है और समाज मे रहकर ही वह अपने व्यक्तित्व का विकास कर पाता है । समाज मे रहकर मनुष्य अपनी योग्यताओं का विकास और सभी प्रकार के कार्यो का क्रियान्वीत भी करता है। यही कारण है की समाज को मनुश्य के लिए विशेष रूप से लाभदायक माना जाता है।

मनुष्य का सर्वप्रथम परिवार रूपी समाज मे अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। परिवार मे उसके व्दारा अपने माता–पिता तथा अन्य सदस्यो के साथ आपसी व्यवहार किया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप उसके व्दारा अपने चरित्र का निर्माण किया जाता है। शिक्षा पर भी वातावरण का प्रभाव भलीभांती देखा जा सकता है। यदि बालक को उचित रूप से वातावरण प्रदान नही किया जाता है। तो निश्चय ही इससे उसके व्दारा पूर्ण रूप से अपने व्यक्तित्व का विकास नही किया जा सकता। इसी कारण आज बालको को अनुकूल वातावरण प्रदान करने विशेष रूप से बल दिया जा रहा है। जिससे उसके व्दारा पूर्ण रूप से वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित किया जाता है। तथा वह शिक्षा कि ओर प्रोत्साहित हो सकता है।

**खेल प्रतियोगितांऐं :–**

आज के युग मे खेल तथा शारीरीक शिक्षा एक बहूत ही महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर चुके है। जिस कारण लोगो की रूचि इन

क्रियाओ मे बढी है। खेलो के महत्व राष्ट्रीय तथा आंतरराष्ट्रीय स्तरोपर आज की कई प्रकार की आयोजित स्पर्धा है। विभिन्न देशो मे खिलाडी खेलो का प्रशिक्षण लेते है और दल प्रतियोगिताओं मे भाग लेते है। इनके अतंर्गत बहुत सारे खेलो को सम्मीलीत किया जाता है। यह प्रतियोगिताएँ विभिन्न खेलों की एक श्रृखंला होती है। जिसमे एक देश के या विभीन्न देशो के खिलाडी भाग लेते है। और प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ होता है उसे विजेता घोषित किया जाता है।

### *प्रतियोगिताओ कि तैयारी :–*

आज कि प्रतिस्पर्धावाले युग मे एक प्रशिक्षक का मुख्य कार्य खिलाडी को इस प्रकार से प्रशिक्षण देना होता है जिससे वह किसी भी स्तर के टूर्नामेंट अच्छा प्रदर्शन कर सके और खेल मे सर्वश्रेष्ठ खिलाडी चुना जा सके। किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए यह आवश्यक है उसे पूर्व नियोजीत तथा क्रमबध्द तरीके से किया जहां इसी प्रकार टूर्नामेंट मे भी सफलता प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है। योजना बनाते समय प्रशिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिए की स्पर्धा वास्तविक रूप मे ही हो रही है। प्रतियोगिता का आयोजन खेल के लक्षों को प्राप्त करने के लिए करना चाहिए। प्रतियोगिता के दौरान खिलाडींयो को अपने गुणो को प्रस्तूत करने के लिए पूर्ण रूप से स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

### *खिलाडींयो को मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार करना :–*

आज टूर्नामेंट मे जीत का महत्व इतना बढ गया है की हर खिलाडी जीतने के खेलता है। और अच्छा प्रदर्शन करने की कोशिश करता है। टूर्नामेंट मे जीतने के लिए खिलाडी का केवल शारीरीक रूप से ही स्वस्थ होना अनिवार्य नही होता बल्की वह मानसिक रूप से भी पूरी तरह तैयार होना चाहिए। मानसिक रूप से खिलाडी को तयार करना ही मनौवैज्ञानिक रूप से खिलाडी को तयार करना खिलाडीयो की व्यक्तीगत विशेषताओं पर निर्भर करती है। टूर्नामेंट मे भाग लेने के लिए खिलाडी को मनोवैज्ञानिक तौर पर तयारी करना अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

### *खेल मे निर्देषन एवंम परामर्ष :–*

मानव जीवन कि समस्याका दृष्टीगोचर होती है। एक और यहां वह अपनी आवश्यकताओ एव योग्यतांओ को प्राप्त करने के लिये जूझता है। तो दुसरी ओर मनुष्य अपन पर्यावरण के साथ संघर्ष करता है। निर्देशन प्राणी के पृथ्वी पर प्रादुर्भाव के समय से ही किसी न किसी रूप मे निरंतर चला आ रहा है। समय चक्र के साथ–साथ निर्देशन के स्वरूप मे भी कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहा है। ऐसा होना स्वाभाविक है क्योंकी निर्देशन का स्वरूप समाज की सामाजीक, सांस्कृतिक, धार्मिक, व्यावसायीक, शैणक्षिक आदि परिस्थितीयों पर निर्भर है।

आदिकाल मे निर्देशन का स्वरूप बहुत सरल था, क्योंकी मनुष्य का जीवन साधारण था। आज की जटील समस्याओं मे तो पथ–प्रदर्शन कि अत्यंत आवश्यकत है । इसी कारण शिक्षा के क्षेत्र मे निर्देशन की आवश्यकता को अनुभव किया गया ।

### *निर्देशन का अर्थ :–*

निर्देशन वह प्रकिया है जिसमे व्यक्ती को उसको समस्याओं का समाधान के लिए विशेष प्रकार की सहायता प्रदान की जाती है । निर्देशन मे वह विधी यह बतलाई है जिनका प्रयोग करके व्यक्ती समायोजन की समस्याओं को स्वयं सुलझा सकता है । निर्देशन का अर्थ मार्ग प्रशस्त, मार्गदर्शन, पथप्रदर्शन अर्था किसी भी व्यक्ती को उसी क्षमताओं, रूचिंयो अभिरूचियों, कुशलतांओं आदि से अवगत करात हुआ जो सुझाव दिए जाते है । उसको निर्देशन कहते है । दुसरे शब्दो में किसी व्यक्ती व्दारा किसी व्यक्ति को सहायता या परामर्श प्रदान करन की प्रक्रिया का नाम है ।

### *बुध्दि :–*

बुध्दि का विकास मस्तिष्क और स्नायुओं के विकास पर निर्भर करता है। बुध्दी का संबध वृध्द मस्तिष्क की सबसे उपरी सतह बवनजवत संलमत वजिीम बमतइतनतप वत बवतजमग से है। सभी प्रकार बौध्दिक क्रियांओ का नियंत्रण मस्तिष्क का यही भाग करता है। जन्म के समय यह भाग केवल पचास प्रतिशत ही विकसीत रहता है। बुध्दी का विकास बौध्दिक क्रियाओं के रूप मे व्यक्त होता है। प्रत्यक्षीकरण, अधिगम, स्मृति, कल्पना, चितंन तथा तर्क की प्रक्रियाए बौध्दिक क्रियाओ की जाती है। बुध्दी एक जन्मजात योग्यता होती है जबकी ज्ञान एक अर्जित वस्तू है। अतंतः ज्ञान विकास की कोई सिमा निर्धारित नही की जा सकती।

### *व्यक्तित्व :–*

दैनिक जीवन मे व्यक्तित्व शब्द का उपयोग अत्यन्त सिमीत अर्थ मे किया जाता है। यदि कोई व्यक्ती समाज के सदस्यो मे अत्यंत लोकप्रिय होता है अर्थात उसकी उपस्थिती अन्य व्यक्तीयों की प्रसन्नता का कारण होती है तो सामान्यतः उस व्यक्ती का व्यक्तीत्व आकर्षक माना जाता है। आकर्षक व्यक्तीत्ववाले व्यक्ती मे नेतृत्व की क्षमता तथा अन्य गुण ही होते है जिनसे समूह के अन्य व्यक्तीयों को उसको उपस्थिती की तत्काल जानकारी हो जाती है।

मनोविज्ञान मे व्यक्तीत्व शब्द का उपयोग व्यापक कार्य मे किया जाता है। ऐतिहासीक दृष्टी से Personality (व्यक्तीत्व) शब्द कि उत्पत्ती लैटिन भाषा के शब्द से हुई है जिसका अर्थ है मुखौटा। नाटको मे कार्य करते समय अभिनेता एक प्रकार के मुखौटे या नकाब का प्रयोग करते थे। जिससे उनका वास्तविक रूप छिपा रहता था। और केवल कृत्रिम रूप ही दर्शको के सामने आता था। उस समय इस शब्द का अर्थ था व्यक्ती का अवास्तविक रूप किंतु मनावैज्ञानिक ने ठिक इसके विपरीत व्यक्तीत्व के अर्थ को वैज्ञानिक एंव विस्तृत बनाकर इसका उपयोग व्यक्ती के अस्तित्व के वास्तविक एव विश्वसनीय गुणों के लिए किया है।

### शारीरीक शिक्षा के उददेश :–

1) शारीरीक विकास
2) मानसिक विकास
3) भावात्मक विकास
4) सामाजिक विकास
5) नैतिक विकास
6) गतिज सबंधी विकास

इन सभी उददेश को शारीरीक शिक्षा क्षेत्र महत्वपूर्ण माना जाता है।

### अध्ययन कि उपयोगिता एवं आवश्यकता :–

प्रस्तूत अध्ययन से प्राप्त परिणाम खेल शिक्षक तथा प्रशिक्षक के लिये अति लाभदायक सिध्द होंगे। खेलशिक्षक तथा प्रशिक्षक अध्ययन के परिणाम से यह ज्ञान होगा की खिलाडीयो के बर्हिमुखी, अतंमुर्खी का खेल संवेगात्मक बुध्दी पर पडनेवाला प्रभाव पडता है या नही। अतः यह परिणाम प्रशिक्षक और खेलशिखक अपने आगे की रणनिती तय करने मे सुविधा प्रदान करेगा।

### समस्या कथन :–

''खिलाडीयो के व्यक्तीत्व आयाम बहिमुर्खी – अतंमुर्खी का खेल संवेगात्मक बुध्दी पर पडनेवाला प्रभाव का अध्ययन'' यह विषय अनुसधान के लिये लिया है।

### परिसिमाये :–

1.प्रस्तूत समस्या के समाधान हेतू न्यादर्ष का चयन विदर्भ स्थित विश्वविद्यालय से किया गया।
2.इस अध्ययन हेतू विश्वविद्यालयीन प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले 200 पुरूष तथा 200 महिला खिलाडींयो का चयन किया गया।
3.प्रस्तूत अध्ययन हेतू व्यक्तीत्व आयाम बर्हिमुखी – अंर्तमुखी का मापन करना निश्चित किया गया।
4.प्रस्तूत अध्ययन हेतू खिलाडींयो का चयन किया गया है। जिनकी उम्र 18 से 25 के मध्य की है।

### सिमाये :–

1.प्रस्तूत अध्ययन हेतू न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधी व्दारा किया गया।
2.अनुसंधान के दौरान अध्ययन को प्रभावित करने वाले अन्य तत्व जैसे पुरूष व महिला खिलाडीयों की सामाजीक स्थिती, आर्थिक स्थिती, शैक्षणिक विकास तथा परिवारीक पृष्ठभूमी पर संशोधक का काई नियंत्रण नही था।
3.अतः यह सभांवित है की व्यक्तीत्व आयाम बहिमुर्खी – अतंमुर्खी इन तत्वो का प्रभाव सभंव हो सकता है। जिससे परिणाम प्रभावित हो सकते है। तथा जिस पर नियंत्रण रख पाना शोधकर्ता के लिये संभव नही था।

### समस्या के उददेश :–

1.पुरूष खिलाडीयो के व्यक्तीत्व आयाम बहिमुर्खी – अंतमुर्खी का उनकी खेल संवेगात्मक बुध्दी पर क्या सार्थक प्रभाव है वो देखना है।
2.महिला खिलाडीयो के व्यक्तीत्व आयाम बहिमुर्खी – अतंमुर्खी का उनकी ओर खेल संवेगात्मक बुध्दी पर क्या सार्थक प्रभाव है वो देखना।

### परिकल्पना :–

पुरूष खिलाडीयों के व्यक्तीत्व आयाम बहिमुर्खी – अतंमुर्खी का उनकी खेल संवेगात्मक बुध्दीपर सार्थक प्रभाव दिखाई देगा।

### अनुसंधांन अध्ययन पध्दती :–

प्रस्तुत अनुसंधान के लिए वर्णनात्मक अथवा विश्लेषणात्मक अनुसंधान अभिकल्प तयार किया गया। अध्ययन विश्व मे विदर्भ स्थित विश्वविद्यालयो मे पढनेवाले और विश्वविद्यालयीन प्रतियोगिता प्रतिनिधीत्व करने वाले पुरूष एवं महिला खिलाडी शामील थे। न्यादर्श का अध्ययन हेतू 200 विश्वविद्यालयीन प्रतियोगिता प्रतिनिधीत्व करने वाली महिला खिलाडीयों का चयन किया गया इस अध्ययन हेतू खिलाडीयो कि आयु सिमा 18 से 25 वर्षे निर्धारित कि गयी। सभी न्यादर्शो का चयन यादृच्छीक विधी के व्दारा किया गया इस अध्ययन हेतू सर्वेक्षण पध्दती का उपयोग करके MGTI प्रश्नावली मे बर्हिमुखी – अंतमुर्खी आयाम के 20 प्रश्न थे। इस परिक्षण मे बहिमुर्खी – अंतमुर्खी व्यक्तीत्व Test, Retest, reliability, coefficient है के लिए 0.88 है। इसी आधार पर खिलाडीयोंस प्रश्नावली भर कर आकडो का एकत्रीकरण किया गया।

### साख्यिकीय विश्लेषण :–

तथ्य विश्लेषण व निर्वचन करने के पश्चात सांख्यिकीय सारणियों का नियम बध्द व उददेश पूर्ण विश्लेषण किया गया। निवर्चन के पश्चात निष्कर्ष निकाले गये। 'Chi Square' Test और Person Product Movment Cor-relation coefficient test का चयन किया गया। अनुसंधान के लिये significance level 0.05 तय की गयी।

## Findings :

खिलाडीयों के व्यक्तीत्व आयाम बहिमुर्खी–अतंमुर्खी का खेल संवेगात्मक बुध्दिपर पडनेवाला प्रभाव का प्राप्त परिणाम को तालिका और आलेख चित्र प्रस्तूत किया गया।

*तालिका कमांक 1*
*पुरूष खिलाडीयोंका बहिमुर्खी – अंतमुर्खी कारक स्तर अनुसार वर्गीकरण*

| बर्हिमुखी – अंतमुर्खी स्तर | खिलाडीयोंकी संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| उच्च | 102 | 51.0 |
| मध्यम | 34 | 17.0 |
| निम्न | 64 | 32.0. |
| कुल | 200 | 100.0 |

*आलेख कमांक 1*

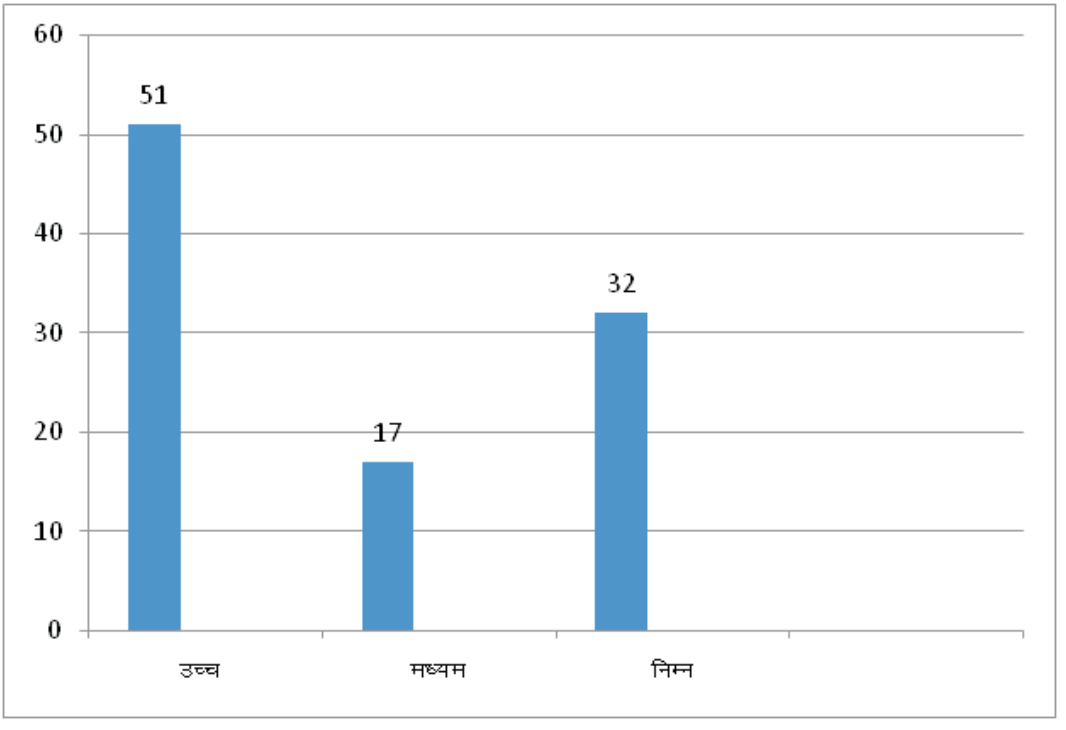


उपरोक्त तालिका और आलेख मे अध्ययन हेतू चयनित विश्वविद्यालयीन प्रतियोगिता मे प्रतिनधित्व करने वाले पुरूष खिलाडीयोंके बहिमुर्खी–अतंमुर्खी कारक स्तर की जानकारी प्रस्तूत की गयी है । प्राप्त जानकारी के अनुसार 51.0 प्रतिषत पुरूष खिलाडीयोका बहिमुर्खी–अंतमुर्खी कारक स्तर उच्च तथा 33.0 प्रतिशत पुरूष खिलाडीयोका बहिमुर्खी–अतंमुर्खी कारक स्तर निम्न पाया गया। इसी तरह 17.00 प्रतिशत पुरूष खिलाडीयो का बहिमुर्खी–अंतमुर्खी कारक स्तर मध्यम पाया गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार यह स्पष्ट होता है की, अध्ययन हेतू चयनित अधिकांष विष्वविद्यालयीन प्रतियोगिता मे प्रतिनिधीत्व करनेवाले पुरूष खिलाडीयोंका बहिमुर्खी – अतंमुर्खी कारक स्तर उच्च है।

*तक्ता कंमाक 2*
*महिला खिलाडीयोका बहिमुर्खी–अंतमुर्खी कारक स्तर अनुसार वर्गीकरण*

| बर्हिमुखी – अंतमुर्खी स्तर | खिलाडीयोंकी संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| उच्च | 60 | 34.0 |
| मध्यम | 48 | 24.0 |
| निम्न | 84 | 42.0. |
| कुल | 200 | 100.0 |

*आलेख कमांक 2*
*महिला खिलाडीयों का बहिमुर्खी–अंतमुर्खी कारक स्तर अनुसार वर्गीकरण*

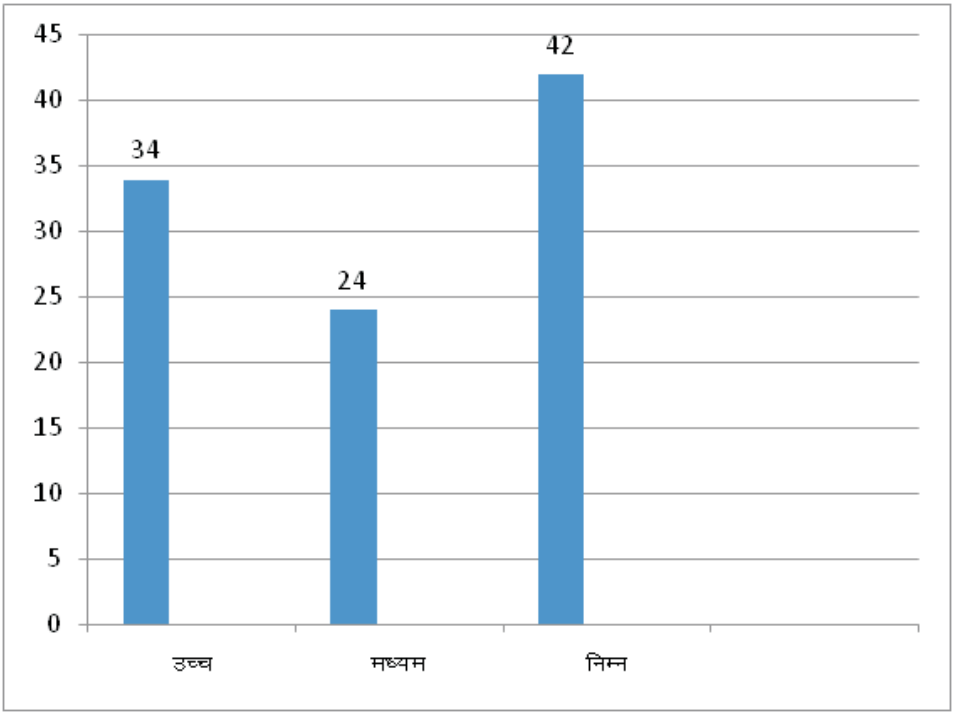


उपरोक्त तालीका और आलेख अध्ययन हेतू चयनित विश्वविद्यालयीन प्रतियोगिता मे प्रतिनिधीत्व करने वाली महिला खिलाडीयो के बर्हिमुर्खी–अतंमुर्खी कारक स्तर की जानकारी प्रस्तूत की गयी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार 42.0 प्रतिषत महिला खिलाडीयोंका बहिमुर्खी–अंतमुर्खी कारक स्तर निम्न तथा 34.0 प्रतिशत महिला खिलाडीयोंका बहिमुर्खी–अतंमुर्खी कारक स्तर उच्च पाया गया। इसी तरह 24.0 प्रतिषत महिला खिलाडीयोका बहिमुर्खी – अंतमुर्खी कारक स्तर मध्यम पाया गया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार यह स्पश्ट होता है की, अध्ययन हेतू चयनित अधिकांष विष्वविद्यालयीन प्रतियोगिता मे प्रतिनिधीत्व करने वाले महिला खिलाडीयोंका बहिमुर्खी–अंतमुर्खी कारक स्तर निम्न है।

### *प्राप्त परिणाम पर विचार विमर्श :–*

व्यक्तीत्व आयाम बहिमुर्खी–अंतमुर्खी का खेल सवेंगात्मक बुध्दी पर प्रभावः–

| बहिमुखता–अंतमुखता | संवेगात्मक बुध्दि |
|---|---|
| पुरूश खिलाडी | 0.264 |
| महिला खिलाडी | 0.245 |

* P<0.05
* P<0.01

### *पुरूष तथा महिला खिलाडी :–*

प्रस्तूत अनुसंधान कार्य मे प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकला है की, व्यक्ती आयाम बहिमुर्खी–अंतमुर्खी को उनकी खेल संवेगात्मक बुध्दी पर पुरूष खिलाडीयो साधारण (0.264) प्रभाव और महिला खिलाडीयो साधारण (0.254) से कम प्रभाव होता है।

### *परिकल्पनाओं का परीक्षण :–*

1.प्रस्तूत अनुसधान मे प्राप्त निष्कर्ष के आधारपर यह परिकल्पना जो कहती है, ''पुरूष खिलाडीयों के व्यक्तीत्व आयाम बहिमुर्खी अंतमुर्खी का उनकी खेल संवेगात्मक बुध्दी पर सार्थक प्रभाव दिखायी देगा''। जो स्वीकार किया जाता है।

2.प्रस्तूत अनुसंधान मे प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह परिकल्पना जो कहती है, ''महिला खिलाडीयो के व्यक्तीत्व आयाम बहिमुर्खी–अंतमुर्खी का उनकी खेल संवेगात्मक बुध्दी पर सार्थक प्रभाव दिखायी देगा'' को स्वीकार किया जाता है।

***निष्कर्ष :–***

व्यक्तीत्व आयाम बहिमुर्खी–अंतमुर्खी का खेल संवेगात्मक बुध्दी पर प्रभाव

***1.पुरूष खिलाडी :–*** प्रस्तूत अनुंसधान कार्य मे प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकाला जाता है की, पुरूष खिलाडीयो के व्यक्तीत्व आयाम बहिमुर्खी–अतंमुर्खी कारको का उनकी खेल संवेगात्मक बुध्दी पर साधारण प्रभाव होत है।

***2.महिला खिलाडी :–*** प्रस्तूत अनुसंधान कार्य मे प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकाला जाता है की, महिला खिलाडीयों की व्यक्तीत्व आयाम बहिमुर्खी–अतंमुर्खी कारक का उनका खेल संवेगात्मक बुध्दी पर साधारण से कम प्रभाव होता है।

***सुचनांए एवं सुझाव :–***

1.खिलाडीयों के व्यक्तीत्व आयामो के अनुसार उन्हे विशिष्ट प्रकार का अभ्यास करवाया जाना चाहिए।
2.व्यक्तीत्व विकास के लिए शिक्षा के साथ–साथ खिलाडीयो को मानसिक परामर्श की प्रदान किया जाना चाहिए।
3.महिला तथा पुरूष खिलाडीयो को व्यक्तीत्व विकास के प्रति जागरूकता एवंम उसके बारे मे जानकारी मुहयां करना चाहिए।
4.प्रस्तूत अध्ययन की व्यापकता को बढाकर इसे राज्य एवंम राष्ट्रीय स्तरपर भी किया जाना चाहिए।

***–: संदर्भ ग्रंथ सूची :–***

1.अरूणकुमार सिहं तथा आशीष कुमार सिहं – व्यक्तीत्व का मनोविज्ञान बंगला रोड दिल्ली – 2000
2.भाई योगेन्द्र जीत – बाल मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दीर आगरा– 1989
3.सिहं समय, खेल मनोविज्ञान, प्रेरणा प्रकाशन, नई दिल्ली – प्रथम संस्करण, 2012
4.Journal Of vocational behavior 2004
5.Mood and Human Performance : Conceptual, measurement and applied issue, Nova Science Publisher 2006